International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 25-12-2020; Accepted: 08-01-2021; Published: 09-02-2021
www.alleducationjournal.com
Volume 6; Issue 1; 2021; Page No. 45-46

जनपद बरेली के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता एक अध्ययन।

प्रियंका शर्मा[1], डॉ. भानु प्रकाश[2]
छात्रा, एम0 एड0, शिक्षाविभाग, ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत
एसो0 प्रोफेसर, शिक्षाविभाग, ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
शिक्षाव्यक्त, समाज और राष्ट्र की प्रगति के साथ साथ सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के लिए आवश्यक है। 'सुभाषित रत्न दोष' में उल्लिखत है कि ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है, जो समस्त तत्वों के मूल को जानने में सहायता करता है तथा सही कार्य करने की विधि बताता है। कोठारी आयोग ने कहा है कि भारत का भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है। जिससे शोध पत्र में डा0 विपीन्द्र नागरा द्वारा निर्मित प्रमाणीकृत Environment Awareness Ability Measure का प्रयोग किया गया है। इसके द्वारा छात्रों में पर्यावरण एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता का विभिन्न परिकल्पनाओं के द्वारा जाने का प्रयास किया गया जा उद्देश्य शोध पत्र में निर्धारित किये गये हैं उनकी प्राप्ति किस स्तर तक प्राप्ति हो सकती है। जिससे यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी तथा छात्र एवं छात्राओं में टी. मान स्तर पर सार्थक स्तर पाया गया। जबकि दोनों बोर्डों के आधार पर छात्र एवं छात्राओं में सार्थक स्तर नहीं पाया गया। अतः जो ज्ञान पर्यावरण एवं पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता उससे सम्बन्धित समस्याओं के आधारभूत समझ प्राप्त करने, उसमें विद्यार्थियों की जिम्मेदारी की भूमिका में सहायक हो, पर्यावरण के प्रति पूर्ण जागरूकता का आशय इसी ज्ञान में है।

कूट शब्दः उच्च माध्यमिक विद्यालय, पर्यावरण शिक्षा, जागरूकता

प्रस्तावना
शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षाके द्वारा सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह कार्य जन्म पूर्व प्रारम्भ हो जाता है। जो सीखने–सिखाने की सप्रयोजन, सामाजिक प्रक्रिया है। जैसाकि स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में कि मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। शिक्षा का प्रमुख कार्य लक्ष्य होता है जो बालक में विभिन्न प्रकार के संस्कारों का विकास करती है और वे उन लक्ष्यों को प्राप्त करते हैं। जैसे– शिष्टाचार, अनुशासन, जागृति, सृजनात्मकता, आशावादी, सज्जनता, जागरूकता आदि गुणों समावेश करती है प्रत्येक क्षेत्र एवं परिस्थिति में मानव का मार्गदर्शन करती है। माध्यमिक शिक्षाव्यवस्था शिक्षा का ऐसा द्वार है, जो एक ओर तो उच्च शिक्षा में प्रवेश के लिए और दूसरा रोजगार एवं जीवनयापन प्रवेश के लिये रास्ता खोलता है। माध्यमिक शिक्षा के अन्तर्गत गणित, मातृभाषा, हिन्दी, अंग्रेजी, कला जनसंख्या शिक्षाके साथ साथ पर्यावरण शिक्षा एवं वर्तमान में पर्यावरण संतुलन के लिए पर्यावरण जागरूकता की शिक्षा भी अनिवार्य है। जो बालकों को बचपन से ही उनके जीवन व अस्तित्व को बनाये रखने के लिए पर्यावरण के महत्व को बताया जायेगा। पर्यावरण जागरूकता एक बृहद् अवधारणा है जो व्यक्ति की सम्पूर्ण परिस्थितियों से जुड़ा है।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अर्थ इस अध्ययन में इस आशय से प्रयुक्त किया है कि विद्यार्थी पर्यावरण से कितना परिचित है कि उन्हें पर्यावरण के विषय में कितनी जानकारी है। पर्यावरण के विषय में छात्र क्या समझते हैं? पर्यावरण का अर्थ क्या है? उन्हें स्पष्ट है या नहीं! क्या पर्यावरण के प्रति संवेदनशील हैं? क्या पर्यावरण प्रदूषण होने का आभास है? क्या उन्हें प्रदूषण के कारणों का ज्ञान है? क्या स्वच्छ पर्यावरण से लगाब रखते हैं? क्या पर्यावरण संरक्षण के लिए कुछ करना चाहते हैं? संरक्षण के लिए सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों का ज्ञान है या नहीं। जो ज्ञान पर्यावरण और उससे सम्बन्धित समस्याओं के आधारभूत समझ प्राप्त करने तथा उसमें मनुष्य की जिम्मेदारी की भूमिका में सहायक हो, पर्यावरण के प्रति जागरूकता का आशय इसी ज्ञान में है।

समस्या कथन
प्रस्तुत शोध पत्र जनपद बरेली के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य
1. उच्च प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
3. उच्च प्राथमिक विद्यालयों के सी0बी0एस0ई0 बोर्ड एवं यू0पी0 बोर्ड के विद्यार्थियों के प्रति पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं
1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्राचीन एवं शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के सी0बी0एस0ई0 एवं यू0पी0 बोर्ड के विद्यार्थियों के प्रति पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सीमांकन
1. केवल बरेली जिले तक सीमित है।
2. केवल 100 विद्यार्थियों को चुना गया है।

अध्ययन का प्रारूप

शोध विधिः सर्वेक्षण विधि को आधार माना गया है।

न्यादर्शः शोधार्थी में यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरणः डॉ0 विपीन्द्र नागरा द्वारा निर्मित प्रमाणीकृत (EAAM-J) Environment Awareness Ability Measure का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियॉ

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–परिणाम

प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है। जो निम्न तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1: उच्च माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता विवरण

क्षेत्र	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मनक विचलन (SD)	टी–मान (t-Value)	परिणाम (Result)
ग्रामीण विद्यार्थी	70	82.82	26.85	.114	0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत
शहरी विद्यार्थी	50	34.45	27.45		

उपरोक्त तालिका–1 मान से स्पष्ट है कि टी–मान 0.114 आप जोकि सार्थकता स्तर .05 तथा 0.01 के मान क्रमशः 1.48 तथा 2. 63 से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अतः ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2: उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता विवरण

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	टी–मान (t-Value)	परिणाम (Result)
छात्र	59	80.64	23.85	.102	0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत
छात्रा	61	81.82	22.93		

उपरोक्त तालिका–2 मान से स्पश्ट है कि टी–मान 0.102 आप जोकि सार्थकता स्तर .05 तथा 0.01 के मान क्रमशः 1.98 तथा 2. 63 से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अतः शहरी छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 3: बरेली जनपद के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के सी0बी0एस0ई0 एवं यू0पी0 बोर्ड के विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता विवरण

संस्थान	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	टी–मान (t-Value)	परिणाम (Result)
सी0बी0एस0ई0 बोर्ड	62	75.82	28.62	3.51	0.05 स्तर पर सार्थक नहीं, अस्वीकृत
यू0पी0 बोर्ड	58	69.95	21.85		

उपरोक्त तालिका–3 मान से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के सी0बी0एस0ई0 बोर्ड की टी–परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी–मान 3.51 आया। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है क्योंकि .05 तथा .01 के मान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 से टी–मान अधिक है। अतः उच्च माध्यमिक विद्यालयों के सी0बी0एस0ई0 बोर्ड एवं यू0पी0 बोर्ड के विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष– प्रस्तुत शोध पत्र में जनपद बरेली विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना है पर्यावरण जागरूकता मापनी के प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. प्रथम परिकल्पना के आधार पर टी–मान के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जारूकता में कोई सार्थकता अन्तर नहीं है।
2. द्वितीय परिकल्पना से प्राप्त टी–मान के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष है कि परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और दोनों छात्र एवं छात्राओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. तृतीय परिकल्पना के प्राप्त परिणाम के आधार पर प्राप्त टी–मान से स्पष्ट है कि सी0बी0एस0ई0 बोर्ड व यू0पी0 बोर्ड के विद्यार्थियों के मध्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता में अन्तर पाया गया है। अतः सार्थक अन्तर नहीं है।

सन्दर्भ सूची

1. गुप्ता एस0पी0 (2012), ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन।
2. कपिल, एच0के0 (2001), ''सांख्यिकीय के मूल तत्व'' आगरा हर प्रसाद भार्गव बुक हाऊस।
3. शर्मा, आर0ए0 (2011), ''शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया'' मेरठ आर0 लाल बुक डिपो।
4. आल्टमैन, आई (1975), ''दा एनवायरनमेंट एवं सोशल ....'' बुक्स कोल कैलिफोर्निया।
5. राय, पारसनाथ (1999), ''अनुसंधान परिचय'' आगरा, गीता पब्लिकेशन।
6. लाल, रमन बिहारी (2012), ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्री सिद्धान्त'', मेरठ रस्तोगी पब्लिकेशन।